

that right. But a little courtesy should be shown to the Speaker by observing the rules; otherwise, I will find it difficult to carry on.

**SHRI HEM BARUA** : *Eve's Weekly* has been vindicated.

**MR. SPEAKER** : I allowed an opportunity to the Minister because such allegations should not go unchallenged. Now he has given his reply.

**श्री हुसैन अहमद कल्लवाय** : अध्यक्ष महोदय, मेरे प्रश्न का उत्तर अशुद्ध है। पूरा उत्तर मंत्री जी से दिलवाया जाय।

**MR. SPEAKER** : I am satisfied. That is enough for me. Now, next question.

**SHRI SRINIBAS MISRA** : But the answer should be related to the question.

**MR. SPEAKER** : I have already called the other question.

### हिन्दी टेलीप्रिन्टर

\*1385. **श्री यशवन्त सिंह कुशवाह** : क्या औद्योगिक विकास तथा समवाय-कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) हिन्दी टेलीप्रिन्टरों तथा टाइपराइटरों की मांग पूरी करने के लिये सरकार द्वारा क्या कार्यवाही की गई है;

(ख) इस सम्बन्ध में अब तक कितनी प्रगति हुई है; और

(ग) इस सम्बन्ध में समूचे देश की मांग पूरी करने का लक्ष्य कब तक पूरा हो जायेगा ?

**THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT AND COMPANY AFFAIRS (SHRI RAGHUNATH REDDI)** : (a) to (c) As regards Hindi Typewriters, the Hindustan Typewriters Limited, Madras, a public sector undertaking, have undertaken the work of manufacturing Hindi Typewriters to meet the requirements in the country. They have concluded an agreement with their Italian collaborators under which the know-

how and tooling required for the manufacture of Hindi Typewriters are expected to arrive in India by May, 1968. Production would commence by July, 1968. The demand during 1968-69 estimated as about 800 machines would be met by this company. It is not possible at this stage to indicate the future requirements of Hindi Typewriters.

Regarding Hindi Typewriters, the requirements of Govt. Offices for the next five years have been assessed at about 17,000 Nos. Two firms are already in production and their total production of Hindi Typewriters during 1967 was 5,003 Nos. The total requirements of Hindi Typewriters in the country have not been estimated and no target has also been fixed in this regard.

**श्री यशवन्त सिंह कुशवाह** : यह जो एक करार किया गया है उस के मुताबिक टेलीप्रिन्टर के कितने प्रतिशत पुर्जे विदेशों से मंगाये जायेंगे और कितने प्रतिशत पुर्जे भारत में ही तैयार किये जायेंगे और वह स्टेज कब आयेगी कि चाहे टेलीप्रिन्टर हो या टाइपराइटर हो उस के लिए न तो बाहर के तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता पड़े और न ही कोई कल पुर्जे मंगाने पड़ें और भारत उस में पूरी तरह आत्मनिर्भर हो जाय इस के लिए कब तक का लक्ष्य रखा गया है ?

**औद्योगिक विकास तथा समवाय-कार्य मंत्री (श्री कल्लवाय अहमद)** : जसा कि शायद आनरेबुल मंत्री को मालूम हो कि यह कम्पनी 1960 में शुरू की गई थी और 1961 से हम ने खास करके यह अंग्रेजी जवान के टेलीप्रिन्टर्स बनाने का काम शुरू किया। पहले कम्पौनेंट पार्ट्स बाहर से मंगा कर यहां एसेम्बल किये जाते थे। हिन्दी टेलीप्रिन्टर्स भी वू कि यहां काम नहीं होता था हम बाहर से यह कम्पौनेंट पार्ट्स मंगा कर यहां एसेम्बल करते थे। शुरू-शुरू में हम को हिन्दी के टेलीप्रिन्टर्स बाहर से मंगाने पड़े लेकिन अब जो हमारा प्रोग्राम है जिसमें इलिय एंड नो हूज है मई के महीने तक मिल जायगा और जुलाई के महीने से जिनको टेली-

प्रिंटर्स की जरूरत होती है उन के कम्पोनेंट पार्ट्स की असेम्बलिंग जुलाई से शुरू हो जायगी। 800 हम को इस साल में टेलीप्रिंटर्स चाहिए और वह सारी डिमांड हम यहां पूरी कर सकेंगे।

**श्री यशवन्त सिंह कुशवाह :** अभी जो टेलीप्रिंटर्स और टाइपराइटर्स के सम्बन्ध में आयात करते रहे हैं उस में भारत को कितनी विदेशी मुद्रा खर्च करनी पड़ती है और जब भारत आत्मनिर्भर हो जायगा तो इस सम्बन्ध में कितनी विदेशी मुद्रा की बचत हो जायगी ?

**श्री फखरुद्दीन अली अहमद :** मैं इस वक्त उस की पूरी परसेंटेज नहीं दे सकता लेकिन करीब करीब सभी चीजें जो हमें चाहिए उन्हें हम यहां पर बना सकेंगे और हम यह टेलीप्रिंटर्स यहां एसेम्बल भी कर सकेंगे।

**श्री नन्वकुमार सोमानी :** जहां तक हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के टेलीप्रिंटर्स के उत्पादन और कीमतों का सवाल है हमारे यहां उत्पादन इतना कम है और उस की डेलीवरी इतनी ज्यादा है कि उस के प्रयोग में बहुत बाधा होती है। मैं भारत सरकार से यह पूछना चाहता हूँ कि जहां तक हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं का सवाल है उस को इनकरै-जर्मेंट देने के लिए क्या वह सर्किट रेंटल में और दाम में कोई सबसिडी देंगे ?

**श्री फखरुद्दीन अली अहमद :** टेलीप्रिंटर्स जो हम बना रहे हैं पब्लिक अंडरटेकिंग्स में उस में तो इस का सवाल ही नहीं आता और जैसे-जैसे जरूरत होगी दूसरी, दूसरी जवानों में भी वह काम हम शुरू करने के लिए तैयार हैं।

**संसद्-कार्य तथा संचार संजी (डा० राम सुमंग सिंह) :** अंग्रेजी टेलीप्रिंटर्स की कीमत 1000 रुपये कम की गई और जितनी कमी अंग्रेजी वाले में की जायगी उतनी ही कमी

हिन्दी के व अन्य भारतीय भाषाओं के टेलीप्रिंटर्स में भी की जायगी।

**SHRI G. VISWANATHAN :** I want to know from the Government whether they accept in principle the need for teleprinters in other major Indian languages. If they do so, what steps have the Government taken so far to produce teleprinters in other languages? If they do not accept it in principle, what is the reason for it?

**SHRI F. A. AHMED :** Our objective is to manufacture teleprinters in every Indian language. But, to begin with, we are trying to satisfy the demand, so far as Hindi teleprinters are concerned. As in the case of Hindi teleprinters, if there is sufficient demand for teleprinters in any other language, we have to begin with import of components and assemble those teleprinters here. But, as the demand develops we will have to take up this activity of manufacture ourselves.

**श्री शिवनारायण :** मैं जानना चाहता हूँ कि हिन्दी और उर्दू में छापने वाले टेलीप्रिंटर्स आप कब तक ईजाद कर लेंगे ?

**श्री फखरुद्दीन अली अहमद :** हिन्दी के बारे में तो मैं ने जवाब दे दिया कि हम 1968 में जितनी जरूरत होगी उतने बनायेंगे, और दूसरी लैंग्वेज के लिये हम देखेंगे कि कितनी जल्दी हम बना सकते हैं।

**श्री प्रकाशचौर शास्त्री :** क्या कभी व्यापार मंत्रालय ने या संचार मंत्रालय ने इस बात का अनुमान लगाया है कि हिन्दी टेलिप्रिंटर्सों को उन के पास कितनी डिमांड है ? जो वह बनाने जा रहे हैं—जैसा कि उन्होंने बतलाया कि एक वर्ष में वह 800 टेलिप्रिन्टर तैयार करेंगे—क्या उस का अनुपात वही है जिस अनुपात से वह अंग्रेजी टेलिप्रिन्टर तैयार कर रहे हैं ? यदि नहीं, तो पिछले बीस वर्षों में जब कि एक ही भाषा के टेलिप्रिन्टर तैयार होते थे, क्यों नहीं उस काम को रोक कर वह हिन्दी और भारतीय भाषाओं के टेलिप्रिन्टरों का

निर्माण करते ? मैं जानना चाहता हूँ कि जितनी डिमांड है उस के अनुपात से कितने तैयार करेंगे ?

श्री फखरुद्दीन अली अहमद : अभी तक हमने जो डिमांड देखी है वह सिर्फ 800 टेलिप्रिटरों की है, और जैसा मैंने कहा, वह हम इस साल मैन्युफैक्चर कर लेंगे। मैं ने सब एजेन्सीज को लिख रक्खा है कि गवर्नमेंट को कितने टेलिप्रिटरों की जरूरत है। जहां तक हिन्दी टेलिप्रिटरों का ताल्लुक है, जितनी जरूरत होगी उतने हम इस साल तैयार कर लेंगे।

---

#### WRITTEN ANSWERS TO QUESTIONS

##### Taxation relief to Small Scale Industries

\*1379. SHRI KAMESHWAR SINGH: Will the Minister of INDUSTRIAL DEVELOPMENT AND COMPANY AFFAIRS be pleased to state :

(a) whether the Industrial Policy envisages taxation relief to small scale units to enable them to develop properly in preference to large-scale manufacturers ; and

(b) if so, why no such relief has so far been given in the case of Crown-cork industry ?

THE MINISTER OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT AND COMPANY AFFAIRS (SHRI F. A. AHMED) : (a) No. In order to enable certain small scale industries to develop properly in preference to large-scale industries certain industries have been specifically ear-marked for them. Manufacture of cork is not one such.

(b) There is nothing further to add to answer already given by the Deputy Prime Minister on the 15th April, 1968 in the Lok Sabha for an Unstarred Question No. 7146.

##### Khadi Silk Industry

\*1382. SHRI BENI SHANKER SHARMA : Will the Minister of COMMERCE be pleased to state :

(a) whether about two lakh artisans of Silk-Khadi Industry in West Bengal will be hard hit in case Government decides to discontinue subsidy on production and retail sale of silk-khadi products from the 1st April, 1968 ;

(b) if so, the reaction of Government thereto ; and

(c) the steps taken or proposed to be taken to safeguard their interests ?

THE MINISTER OF COMMERCE (SHRI DINESH SINGH) : (a) The subsidy was for capital formation in the various institutions to which it was given and was not passed on to the artisans, who will not, therefore, be affected by the discontinuance of this subsidy.

(b) and (c). Do not arise.

##### National Arbitration Councils

\*1383. SHRI HIMATSINGKA : Will the Minister of COMMERCE be pleased to state :

(a) whether Government's attention has been drawn to the 2-day seminar on International Commercial Arbitration which ended in New Delhi on the 19th March, 1968 ;

(b) if so, whether one of the main suggestions mooted at the seminar was for setting up of a network of National Arbitration Councils and regional associations for all the industrialised countries ; and

(c) the reaction of Government to these and other suggestions and observations made at the seminar with a view to improving industrial relations in the country ?

THE MINISTER OF COMMERCE (SHRI DINESH SINGH) : (a) to (c). The Seminar was conducted by the Indian Council of Arbitration. The proceedings of the Seminar have not yet been received by Government. The suggestions and observations made at the seminar will be examined when they are received from the Indian Council of Arbitration.